विषय-सूची

आमुख

प्रस्तावना

अध्याय एक

मनु की पुत्रियों की वंशावली

स्वायंभुव मनु की तीन पुत्रियाँ

आकूति को यज्ञ की प्राप्ति

यज्ञ तथा दक्षिणा से बारह पुत्रों का जन्म

पूर्णिमा के वंशधरों का वर्णन

अत्रि तथा अनसूया द्वारा कठिन तपस्या

ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव का अत्रि मुनि के पास जाना

तीनों देवों द्वारा अत्रि को वरदान

परम योगी दत्तात्रेय का जन्म

वसिष्ठ को सात विशुद्ध ऋषियों की प्राप्ति

कर्दम के वंशजों द्वारा ब्रह्माण्ड का बसाया जाना

नर-नारायण का सुखद आविर्भाव

उज्ञास अग्नि-देवों की उत्पत्ति

अध्याय दो

दक्ष द्वारा शिवजी को शाप

विश्व के आध्यात्मिक स्वामी श्रीशिव

शिवजी द्वारा दक्ष का अपमान

दक्ष का शिवजी के विपक्ष में बोलना

दक्ष द्वारा शिवजी को शाप

नन्दीश्वर द्वारा दक्ष को शाप

भृगु द्वारा शिवजी के अनुयायियों का शापित होना

शिवजी द्वारा यज्ञ-स्थल का परित्याग

देवताओं का अपने-अपने धामों को प्रस्थान

अध्याय तीन

श्रीशिव तथा सती का संवाद

दक्ष द्वारा यज्ञ का आयोजन

यज्ञ में जाने की सती की इच्छा

भौतिक स्नेह के लिए दीवानी स्त्रियाँ

शिव द्वारा दक्ष के द्वेषपूर्ण वचनों का स्मरण

भौतिक ऐश्वर्य का घमंडी दक्ष

शिवजी का उच्च स्थान दक्ष को असहनीय

शिवजी द्वारा वासुदेव का विशुद्ध चिन्तन

शिवजी का सती को उपदेश

अध्याय चार

सती द्वारा शरीर-त्याग

सती का अस्थिर चित्त

अपने पति के पास से सती का प्रस्थान

दक्ष की चुप्पी से सती असन्तुष्ट

सती द्वारा पिता को धिक्कारा जाना

शिव का निरादर नहीं करना चाहिए

शिव के अशिव गुण

सती द्वारा निज देह का तिरस्कार

सिद्ध आत्माओं का ऐश्वर्य

सती का योग में लीन होना

प्रज्ज्वलित अग्नि में सती द्वारा शरीर का त्याग

दक्ष ब्राह्मण होने के लिए अयोग्य

भृगु मुनि द्वारा ऋभु देवताओं की उत्पत्ति

अध्याय पाँच

दक्ष के यज्ञ का विध्वंस

शिव का क्रुद्ध होना

भयावने श्याम असुर की उत्पत्ति

शिव के सैनिकों द्वारा इस भयानक व्यक्ति का अनुसरण

शिव का ताण्डव नृत्य

यज्ञ-स्थल का विध्वंस

वीरभद्र द्वारा दक्ष का शिरच्छेद

अध्याय छह

ब्रह्मा का शिवजी को मनाना

पुरोहितों तथा देवताओं का ब्रह्माजी के पास जाना

कैलास धाम

सरोवर, जिसमें सती स्नान करती थीं

पवित्र नदियों में अप्सराओं द्वारा आनन्द

स्वर्ग के वासियों के विमान

सन्त पुरुषों से घिरे शिवजी

समस्त चिन्तकों के अगुवा शिवजी

शिव से ब्रह्माजी की वार्ता

उपद्रवियों को घोर नरक

विधाता द्वारा द्वेषी व्यक्तियों का वध

वैष्णव कभी भी माया से मोहित नहीं होते

इस युग के लिए संस्तुत यज्ञ

अध्याय सात

दक्ष द्वारा यज्ञ की समाप्ति

ब्रह्मा के वचनों से शिवजी का शान्त होना

दक्ष को बकरे का सिर प्रदान किया जाना

दक्ष का हृदय निर्मल हुआ

भगवन् शिव से दक्ष की प्रार्थना

ब्राह्मणों द्वारा आहुति की व्यवस्था

भगवान् नारायण का प्राकट्य

भगवान् विष्णु—सबों के आराध्य

दक्ष द्वारा भगवान् की स्तुति

संसार रूपी विचित्र दुर्ग

माया का दुर्लंघ्य जादू

मन तथा नेत्रों को अच्छा लगने वाला विष्णु का स्वरूप

हाथी से मन की तुलना

सत्व गुण के आगार विष्णु

देवताओं का अपनी रक्षा के लिए विष्णु पर निर्भर रहना

मनुष्य जीवन का मूल्य

भगवान् विष्णु ही सर्वस्व

भगवान् के पवित्र नाम का जप

आत्मनिर्भर साक्षी परमात्मा

ब्रह्म को जानने वाला

धर्म पथ पर आसीन दक्ष

अध्याय आठ

ध्रुव महाराज का गृहत्याग और वनगमन

अधर्म भी ब्रह्मा के पुत्र रूप में

स्वायंभुव मनु की सन्तानें

ध्रुव महाराज का अपमान

ध्रुव द्वारा राजमहल का परित्याग

ध्रुव की माता का उपदेश

भगवान् के चरणकमलों की शरण ग्रहण करना

नारद मुनि का आश्चर्यचकित होना

पूर्वकर्मों द्वारा जीवात्माओं को वश में रखना

अज्ञानता के अंधकार को पार करना

ध्रुव में ब्राह्मण विनयशीलता का अभाव

नारद मुनि का उपयुक्त उपदेश

मधुवन

ध्यान का लक्ष्य श्रीभगवान् की प्राप्ति

भगवान् पुरुष हैं

सिद्ध पुरुषों का आकाश-गमन

तुलसीदल श्रीकृष्ण को अत्यन्त प्रिय

भगवान् की पूजा की सामग्री

ध्रुव महाराज का मधुवन प्रवेश

नारद मुनि द्वारा राजा को उपदेश

गुरु के आदेशों का पालन

ध्रुव महाराज का परमेश्वर को वश में करना

भगवान् द्वारा देवताओं को आश्वासन

अध्याय नौ

ध्रुव महाराज का घर लौटना

ध्रुव के समक्ष भगवान् का प्रकट होना

ध्रुव द्वारा भगवान् की स्तुति

कल्पवृक्ष के समान भगवान्

जीवात्माओं की विभिन्न योनियाँ

भगवान् विष्णु द्वारा यज्ञफल का भोग

भगवान् द्वारा ध्रुव को बधाई

ध्रुव को ध्रुव-नक्षत्र प्रदान किया जाना

भगवान् विष्णु का अपने धाम को जाना

भौतिक कामनाओं के लिए ध्रुव का लज्जित होना

भगवान् के चरणकमल की शरण

राजा उत्तानपाद द्वारा अपने को अधम समझा जाना

ध्रुव का अपने पिता से मिलन

सुनीति—परम वीर की माता

राजधानी का वर्णन

ध्रुव का राजगद्दी पर बैठना

अध्याय दस

यक्षों के साथ ध्रुव महाराज का युद्ध

यक्ष के द्वारा ध्रुव महाराज के भाई का वध

यक्षों द्वारा वीरता प्रदर्शन

ध्रुव द्वारा अनवरत बाणवर्षा

असुरों की मायावी चालें

अध्याय ग्यारह

युद्ध बन्द करने के लिए ध्रुव को स्वायंभुव मनु की सलाह

ध्रुव के बाणों से शत्रु सैनिकों में त्राहि-त्राहि

स्वायंभुव मनु द्वारा सदुपदेश

भौतिक जगत की सृष्टि

शाश्वत काल के रूप में भगवान्

परमेश्वर द्वारा जन्म तथा मृत्यु की उत्पत्ति

क्रोध आत्म-साक्षात्कार का शत्रु

अध्याय बारह

ध्रुव महाराज का भगवान् के पास जाना

ध्रुव महाराज से कुबेर की बात

कुबेर द्वारा ध्रुव को वरदान

ध्रुव महाराज ने अनेक यज्ञ सम्पन्न

ध्रुव—नागरिकों के साक्षात् पिता

ध्रुव महाराज द्वारा वन में विश्राम

ध्रुव के समक्ष विष्णु के पार्षदों का आगमन

नन्द तथा सुनन्द द्वारा ध्रुव को सम्बोधन

ध्रुव द्वारा अपनी माता का स्मरण

नारद द्वारा ध्रुव का यश-गान

भक्तों द्वारा ध्रुव के विषय में कथा-श्रवण

ध्रुव महाराज का आख्यान दिव्य ज्ञान है

अध्याय तेरह

ध्रुव महाराज के वंशजों का वर्णन

प्रचेताओं के विषय में विदुर की जिज्ञासा

ध्रुव के पुत्र उत्कल की सिंहासन के प्रति अनिच्छा

वत्सर का राजसिंहासन पर आसीन होना

मुनियों द्वारा राजा वेन को शाप

राजा अंग द्वारा यज्ञ सम्पन्न

राजा अंग द्वारा विष्णु को आहुति देना

साक्षात् मृत्यु के नाती के रूप में वेन

राजा अंग का गृह-परित्याग

अध्याय चौदह

राजा वेन की कथा

वेन का सिंहासनारूढ़ होना

राजा वेन द्वारा धार्मिक अनुष्ठानों पर रोक

ऋषियों की राजा वेन से वार्ता

पवित्र राजा के गुण

राजा वेन का ब्राह्मणों को उत्तर

मुनियों द्वारा राजा वेन की भर्त्सना

सुनीथा द्वारा वेन के शव का संरक्षण

वेन की जाँघ से बाहुक का जन्म

अध्याय पंद्रह

राजा पृथु की उत्पत्ति और अभिषेक

वेन की बाहुओं से नर तथा नारी का जन्म

ऐश्वर्य की देवी का अर्चि रूप में अवतार

राजा पृथु का सिंहासन पर बैठना

राजा पृथु ने कहा

अध्याय सोलह

बन्दीजनों द्वारा राजा पृथु की स्तुति

गायकों द्वारा राजा का यश-गान

अधर्मियों को दण्ड देने वाले राजा पृथु

विश्व-रक्षक के रूप में राजा पृथु

अग्नि के समान राजा पृथु का न्यायी होना

राजा द्वारा समस्त स्त्रियों का सम्मान

राजा द्वारा एक सौ यज्ञ सम्पन्न होंगे

अध्याय सत्रह

महाराज पृथु का पृथ्वी पर कुपित होना

प्रजा का भूखों मरना

पृथ्वी का राजा पृथु से दूर भगना

राजा से गो रूप पृथ्वी की विनती

राजा पृथु द्वारा पृथ्वीलोक को उत्तर

पृथु महाराज का यम जैसा बनना

पृथ्वीलोक द्वारा सम्बोधन

आदि वराह के रूप में भगवान्

अध्याय अठारह

पृथु महाराज द्वारा पृथ्वी का दोहन

पृथ्वी द्वारा राजा को आश्वासन

अभक्तों द्वारा अन्न का उपभोग

पृथ्वी द्वारा राजा की इच्छा-पूर्ति

देवताओं द्वारा पृथ्वी से रक्त-दोहन

असुरों द्वारा पृथ्वी से रक्त-दोहन

पृथ्वी द्वारा सबों को भोजन का दान

अध्याय उन्नीस

राजा पृथु के सौ अश्वमेध यज्ञ

राजा पृथु के यज्ञों में विष्णु की उपस्थिति

राजा पृथु को अनेकों उपहार प्रदान किये गये

इन्द्र द्वारा यज्ञ-अश्व का चुराया जाना

इन्द्र का छल वेश परित्याग

इन्द्र द्वारा संन्यास ग्रहण करना

भगवान् ब्रह्मा द्वारा यज्ञ की समाप्ति

देवताओं में भी अवांछित कामनाएँ

राजा पृथु द्वारा इन्द्र के साथ सन्धि

परिशिष्ट

लेखक परिचय

PRELIMINARY PAGEs

विषय-सूची

आमुख

प्रस्तावना

अध्याय बीस

महाराज पृथु के यज्ञस्थल में भगवान् विष्णु का प्राकट्य

भगवान् विष्णु का प्रकट होना

बुद्धिमान शरीर के प्रति आसक्त नहीं होते

भक्त का मन विशाल तथा पारदर्शी हो जाता है

भगवान् विष्णु का राजा पृथु को उपदेश देना

भगवान् विष्णु का पृथु के चरित्र से प्रसन्न होना

राजा पृथु द्वारा भगवान् के चरणकमलों की पूजा करना

महाराज पृथु द्वारा प्रार्थना

शुद्ध भक्तके मुख से श्रवण

ब्रह्माण्ड की जननी लक्ष्मी जी

वेदों के मधुर स्वरों से बद्ध लोग

भगवान् द्वारा पृथु महाराज को आशीष

भगवान् का अपने धाम जाना

अध्याय इक्कीस

महाराज पृथु द्वारा उपदेश

राजा की नगरी का सुन्दर ढंग से सजाया जाना

सभी नागरिकों द्वारा राजा का स्वागत

देवताओं द्वारा पृथु के चरणचिह्नों का अनुगमन

राजा पृथु द्वारा महान् यज्ञ का शुभारम्भ करना

महाराज पृथु का सुन्दर भाषण

अपवित्र राजा की दशा

परम अधिकारी का अस्तित्व होना

धर्म पथ पर निन्दनीय व्यक्तियों का मोहग्रस्त होना

भक्त द्वारा त्याग दिखलाना

भगवान् द्वारा विविध प्रकार के यज्ञों का स्वीकार किया जाना

राजकुल से अधिक शक्तिशाली वैष्णव

ब्राह्मणों तथा वैष्णवों की नियमित सेवा

भक्तों के मुखों में से भेंटें स्वीकार करना

वैष्णव के चरणकमलों की धूलि

साधु पुरुषों द्वारा राजा पृथु को बधाई

अध्याय बाईस

चारों कुमारों से पृथु महाराज की भेंट

चारों कुमारों का आगमन

राजा द्वारा चारों कुमारों की पूजा

राजा पृथु का अत्यन्त संयम के साथ बोलना

चारों कुमारों का शिशुवत् व्यवहार करना

सनत्कुमार का बोलना

जीवन का परम उद्देश्य

भगवान् की महिमा का अमृतपान

भक्त सादा जीवन बिताएँ

भक्ति-अनुशीलन में वृद्धि करना

आत्मा का उपाधिमय होना

स्वार्थ का प्रबलतम विरोध

मोक्ष पर अत्यन्त गम्भीरता से विचार करना होता है

परमात्मा: शाश्वत एवं दिव्य

अज्ञान-सागर को पार करना कठिन

पृथु महाराज द्वारा कुमारों को सर्वस्व दान की भेटं

कुमारों द्वारा राजा के शील की प्रशंसा करना

पृथु महाराज का एकमात्र उद्देश्य भगवान् को प्रसन्न करना

महाराज पृथु को पाँच पुत्रों का लाभ

महाराज पृथु द्वारा सबों को प्रसन्न किया जाना

पृथु महाराज के यश की सर्वत्र घोषणा

अध्याय तेईस

महाराज पृथु का भगवद्धाम लौटना

महाराज पृथु का वन गमन

पृथु महाराज द्वारा कठिन तपस्या का किया जाना

पृथु महाराज का भक्ति में पूर्णत:लीन रहना

महाराज पृथु द्वारा भौतिक शरीर का त्याग

पृथु महाराज का समस्त उपाधियों से मुक्त होना

महारानी अर्चि द्वारा वन में राजा का अनुगमन

महारानी अर्चि द्वारा चिता तैयार किया जाना

देवताओं की पत्नियों द्वारा महारानी अर्चि का यशोगान

महारानी अर्चि का अपने पतिलोक में पहुँचना

महाराज पृथु का आख्यान सुनने का माहात्म्य

शुद्ध भक्त द्वारा भी पृथु महाराज के विषय में श्रवण किया जाना

अध्याय चौबीस

भगवान् शिव द्वारा की गई स्तुति का गान

विजिताश्व का सम्राट बनना

महाराज अन्तर्धान के तीन पुत्र

महाराज बर्हिषत् का विवाह

प्राचीनबर्हि के पुत्रों की भगवान् शिव से भेंट

अपनी संहारक शक्तियों से युक्त शिवजी

प्रचेताओं द्वारा विशाल जलाशय का दर्शन

प्रचेताओं से शिवजी की वार्ता

भक्तगण शिवजी को परम प्रिय

शिवजी द्वारा स्तुति

शिवजी द्वारा भगवान् अनिरुद्ध की स्तुति किया जाना

भगवान् द्वारा अपनी दिव्य वाणी(शब्द) का विस्तार करना

भगवान् सबसे प्राचीन एवं परम भोक्ता

भगवान् समस्त सौंदर्य के समष्टि (सार सर्वस्व) हैं

भगवान् के कन्धे सिंह के कन्धों के समान हैं

भगवान् के चरणकमलों का सौंदर्य

भक्तों द्वारा सहज प्राप्य भगवान्

भक्तों के पास काल नहीं पहुँचता

भगवान् सर्वत्र व्याप्त हैं

विराट रूप

भौतिक सृष्टि का तथाकथित सुख

काल प्रत्येक वस्तु को छिन्न-भिन्न करता है

ब्रह्माजी भी भगवान् की स्तुति करते हैं

पवित्र नाम जप की योग पद्धति

ज्ञान की प्राप्ति उच्चतम सिद्धि है

शिवजी की स्तुति का महत्त्व

अध्याय पच्चीस

राजा पुरञ्जन के गुणों का वर्णन

राजा प्राचीन बर्हिषत् पर नारद द्वारा दया-प्रदर्शन

तथाकथित सुन्दर जीवन में रुचि रखने वाले

नारद द्वारा राजा पुरञ्जन के इतिहास का वर्णन किया जाना

राजा पुरञ्जन की अनन्त भौतिक लालसाएँ

नौ द्वारों वाली नगरी का वर्णन

राजा पुरञ्जन की एक सुन्दर स्त्री से भेंट

राजा पुरञ्जन का स्त्री को सम्बोधित करना

पुरञ्जन द्वारा महान् वीर के रूप में आत्म-परिचय दिया जाना

स्त्री का राजा से बात करना

गृहस्थ जीवन के सुख

राजा तथा स्त्री का नगरी में प्रवेश करना

नव द्वारों का वर्णन

राजा द्वारा अपनी रानी की समस्त इच्छाओं की पूर्ति

राजा का पूर्णरुपेण ठगा जाना

अध्याय छब्बीस

राजा पुरञ्जन का आखेट के लिए वन को जाना और रानी का क्रुद्ध होना

राजा का जंगल के लिए प्रस्थान

राजा द्वारा अनेक निर्दोष पशुओं का वध

मनमाना कार्य करने वाले व्यक्ति का पतन होना

आखेट के बाद राजा का थक जाना

राजा का कामदेव द्वारा मोहित होना

सद्पत्नी सद्बुद्धि की दात्री है

राजा द्वारा अपनी पत्नी के सौंदर्य की प्रशंसा करना

अध्याय सत्ताईस

राजा पुरञ्जन की नगरी पर चण्डवेग का

धावा और कालकन्या का चरित्र

राजा पुरञ्जन का अपनी पत्नी के साथ सुखभोग

राजा के विवेक का विचलित होना

राजा द्वारा अपनी पत्नी से ६,६००पुत्रों को उत्पन्न किया जाना

राजा द्वारा अपने पुत्रों तथा पुत्रियों का ब्याह सम्पन्न किया जाना

राजा पुरञ्जन द्वारा देवताओं की पूजा

चण्डवेग नामक राजा

राजा तथा उसके मित्रों का चिन्तित होना

कालकन्या द्वारा नारद को शाप

यवनराज द्वारा कालकन्या को सम्बोधित करना

अध्याय अट्ठाईस

अगले जन्म में पुरञ्जन को स्त्रीयोनि की प्राप्ति

घातक सैनिकों द्वारा पुरञ्जन की नगरी पर आक्रमण

राजा के समस्त सौंदर्य तथा ऐश्वर्य की हानि

कालकन्या द्वारा राजा की नगरी का विध्वंस

सर्प द्वारा नगरी त्यागने की इच्छा व्यक्त करना

राजा को अपने परिजनों की चिन्ता

राजा को बन्दी बनाने के लिए यवनराज का आना

राजा परमात्मा को स्मरण करने में असमर्थ

पुरञ्जन का राजकन्या के रूप में जन्म लेना

राजा मलयध्वज की संतानें

मलयध्वज का एकान्तवास

राजा मलयध्वज द्वारा समस्त द्वन्द्वों को जीतना

राजा मलयध्वज को पूर्णज्ञान की प्राप्ति

रानी विदर्भी का अपने पति की सेवा में लगे रहना

रानी द्वारा अपने पति की मृत्यु पर शोक व्यक्त करना

एक ब्राह्मण द्वारा रानी को शान्त किया जाना

परमात्मा: परम अन्तरंग सखा

आत्मा का शरीर रूपी नगरी में छिपे होना

आत्मा तथा परमात्मा की वास्तविक स्थिति

अध्याय उन्तीस

नारद तथा राजा प्राचीनबर्हि के मध्य बातचीत

जीवात्मा का देहान्तर

इन्द्रियों का वर्णन

नेत्रों का स्वरूपों के दर्शन में व्यस्त रहना

प्रकृति के गुणों द्वारा मन का प्रभावित होना

शरीर की आयु का क्रमश: घटना

जीव द्वारा विभिन्न शरीरों की प्राप्ति

जीव कुत्ते के समान है

समस्त समस्याओं का अन्तिम समाधान

कृष्ण-चेतना (भक्ति) का अनुशीलन

देवों की पूजा से भगवान् को नहीं समझा जा सकता

वैदिक अनुष्ठान जीवन के लक्ष्य नहीं

भगवान् को प्रसन्न करने का एकमात्र उपाय: भक्ति

गुरु का कृष्ण से अभिन्न होना

गृहस्थ जीवन की शोचनीय स्थिति

जीवन उद्देश्य के प्रति ऋषियों का भी मोहग्रस्त होना

सूक्ष्म शरीर सदैव रहता है

जीव अपने मनोरथ को पूरा करता है

मन: भूत तथा भावी शरीरों का सूचक

भक्त का भगवान् के ही समान ब्रह्माण्ड को देखना

आत्मा का देहान्तर

बद्धजीव के रूप में प्राणी का बन्दी होना

राजा प्राचीनबर्हि का गृहत्याग

भौतिक जगत को पवित्र करने वाला यह आख्यान

अध्याय तीस

प्रचेताओं के कार्यकलाप

प्रचेताओं द्वारा भगवान् विष्णु को प्रसन्न किया जाना

भगवान् के शरीर का वर्णन

भगवान् द्वारा प्रचेताओं को सम्बोधन किया जाना

प्रम्लोचा तथा कण्डु से उत्पन्न हुई कन्या

प्रचेताओं को प्रदत्त विशेष सुविधाएँ

भगवान् का अस्तित्व पूर्णतया स्वतंत्र

भक्तों द्वारा अपने कार्यों में ताजा और नवीन अनुभव किया जाना

प्रचेताओं द्वारा की गई स्तुति

भगवान् का अस्तित्व पूर्णतया स्वतंत्र

भगवान् समस्त कार्यों के साक्षी

भगवान् का अर्चाविग्रह विस्तार

भगवान् की अनन्त नाम से ख्याति

शुद्ध भक्तों की संगति

भक्त तीर्थस्थानों को पवित्र करते हैं

भगवान् की वासुदेव रूप में ख्याति

प्रचेताओं द्वारा पृथ्वी को वृक्षरहित बनाए जाने की इच्छा

दक्ष का जन्म

अध्याय इकतीस

प्रचेताओं को नारद का उपदेश

प्रचेताओं द्वारा गृहत्याग

नारद का प्रचेताओं को देखने आना

प्रचेताओं को नारद का उपदेश

तीन प्रकार के मनुष्य जन्म

समस्त शुभ कर्मों का उद्देश्य

परमेश्वर से सारी वस्तुएँ उद्भूत हैं

परमेश्वर समस्त प्राणियों के परमात्मा हैं

भगवान् द्वारा भक्तों के कार्यों का रसास्वाद

प्रचेताओं का भगवद्धाम को वापस जाना

परिशिष्ट